चमड़े का "पकाना" या शुद्धिकरण

पशुओं की खाल पकाए विना पहनने लायक नही होती है। खाल पकाने की प्रक्रिया यानी मांस, रक्त, केश आदि जो खाल से चिपका रहता है उसे साफ करना, फिर चमड़े को मुलायम और टिकाऊ बनाना। चमड़े का शुद्धिकरण यानी इसमें कार्यरत हर व्यक्ति के आरोग्य का अशुद्धिकरण, क्योंकि चमड़ा पकाने में क्रोमियम के क्षारों जैसे बहुत ही तेज़ और क्षयकारी द्रव्यों का उपयोग होता है। चमड़ा पकाने के कारखाने में बहुत कष्टकर स्थिति में काम करना पड़ता है जहां ऐसे क्षयकारी द्रव्यों के संसर्ग से इस कार्य में लगे लोगों को आजीवन रोगग्रस्त रहना पड़ता है।

यदि आप रसायनिक प्रदूषण से बचना चाहते हैं तो कॅन्वास या कॉड्यूरॉय कपडे के जूतों का उपयोग कीजिये, ये ऑफिस के उपयोग के लिए भी अच्छे होते हैं। चमड़े की अपेक्षा उनमें हवा का प्रवाह अच्छा रहेगा, वे आरामदेय भी होते हैं, सस्ते भी हैं, और तो और सीधे मशीन में धुल जाते हैंः इससे अधिक और क्या चाहिये?

असली चमड़े को पहचानना

असली चमड़े का रेशेदार पार्श्व-भाग

- असली चमड़े का उलटा भाग रेशेदार होता है, कृत्रिम चमड़े का पिछला भाग कपड़े का होता है।
- असली चमड़ा मज़बूत होता है परन्तु मुड़ और सिकुड़ सकता है, कृत्रिम चमड़ा अधिक आसानी से फटता और टूटता है।

असली चमड़ा मुड़ता-सिकुड़ता है

रेक्जिन के सतह की अभंग एकरूपता

- कृत्रिम चमडे का डिज़ाईन उसकी पूरी सतह पर अभिन्न समानता का होता है। असली चमड़े के सतह पर डिज़ाईन की विविधता पायी जाती है।
- असली चमड़ा जलता है तो उसका गंध बाल के जलने के जैसा होता है।
- अंततः, असली चमड़ा बहुत कीमती होता है।

Printed for BWC by The Rotary Club of Bombay

हमारे चमड़े की वस्तुएं आती कहां से हैं?

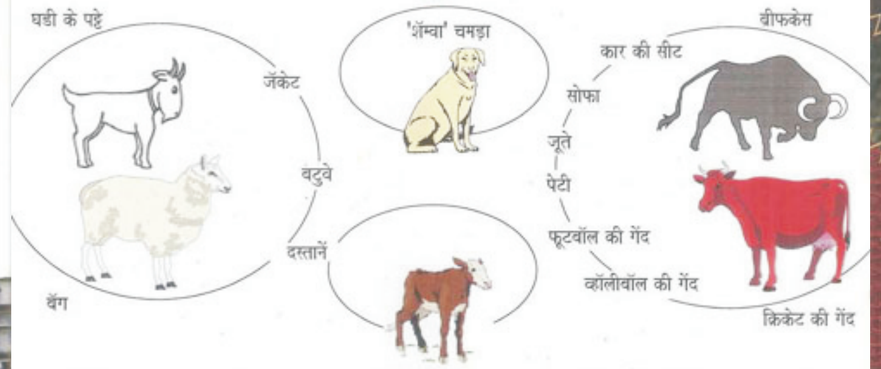

स्मरण रहे, चमड़े की सहायता से मांस सस्ता बनता है

यदि हम चमड़े का उपयोग न करें तो मांसाहारियों को मांस के लिए प्रति किलो अधिक दाम देना पड़ेगा। अतः मांस महंगा हो जाएगा। या फिर कसाइयों का धंदा कम लाभकारी हो जाएगा। दोनों परिणाम कितने लुभावने! चमड़े का उपयोग मांस की आपूर्ति को सस्ता बनाता है। यदि हम चाहते हैं कि मांसाहारियों की संख्या कम हो तो हमें चमड़े का उपयोग त्याग देना चाहिए।

हमारे प्रस्तर युग के पूर्वजों को कोई दूसरा पर्याय नहीं था। ठण्ड से बचने के लिये उनको मारे गये पशुओं के खाल पहनने के अलावा चारा नहीं था। परन्तु हमारे पास चमड़े के उपयोग का क्या बहाना है। क्या आज भी हमें पहनावे के लिए कत्ल करने की आवश्यकता है?

आइये, समझदार बनें और चमड़े का त्याग करें!

ब्यूटी विदाऊट क्रुएल्टी

४, प्रिंस ऑफ वेल्स ड्राइव्ह, पुणे ४११ ०४० भारत. दूरध्वनी: (०२०) २६८६ ११६६, २६८६ ००१६ फॅक्स: (०२०) २६८६ १४२०
ईमेल: admin@bwcindia.org वेबसाईट: www.bwcindia.org

गाय का कत्ल केवल बीफ खाने से नहीं होता...

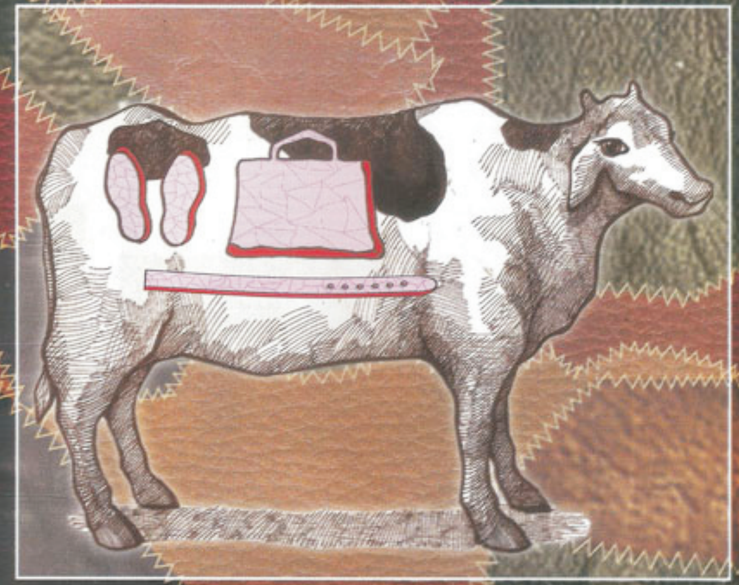

...चमड़े के जूते पहनने से भी होता है
और पर्स और थैलों से भी,
और जॅकेट और बेल्ट से भी,
और कार के गद्दों और सोफा के आवरण से भी।

आइये, **चमड़े** के बारे में कुछ बातें सीखें...

चमड़े के बारे में प्रचलित भ्रम

चाहे फैशन के नाम पर हो, या आवश्यक्ता के नाम पर, अथवा जूते या सोफा-कवर के लिए हो, आज चमड़ा कल किये गये प्राणि का ही बनता है।

आधुनिक चमड़ा: नैसर्गिक मृत्यु से नहीं

क्या कहा? "कल" किया गया? तो चमड़ा क्या प्राकृतिक मृत्यु से मरने वाले प्राणियों से नहीं प्राप्त होता है?

इस प्रकार प्राप्त कच्चे माल के आधार पर जूते का धंदा चलाने का प्रयास करके देखिए! आपको अनुभव हो जाएगा कि ऐसा चमड़ा इन दिनों कितना नाम-मात्र का प्राप्त होता है। आज ९९ प्रतिशत चमड़ा कलखाने का ही होता है।

आज का चमड़ा: 'उप'-उत्पाद नहीं

ठीक है, किन्तु इनका उपयोग करने में क्या दोष है? यह तो मांस उद्योग की अप्रधान उपज है, न? यह कल चमड़े के लिए ही तो नहीं हुआ है।

वस्तुत: कल किसलिए होता है यह तो विवादास्पद प्रश्न है। क्योंकि कल होने पर इसके विभिन्न भागों के बहुतेरे दावेदार हैं। भारत के क्षीण गाय-बैलों को देखिए, ख़ास तौर से उनको जिन्हें सैंकड़ों किलोमीटर दूर उन प्रदेशों से जहां गोरक्षा संबंधित कोई कानून नहीं हैं हांक कर पैदल ले जाया जाता ह। आपको विश्वास हो जाएगा कि चाहे जिसके लिए भी इनका कल होता हो वह मांस नहीं है। तो फिर किसके लिये कल होता है? जी हां, आपने ठीक सोचा... चमड़े के लिये।

सबसे बड़ा अपराधी कौन?

मांस खरीदने के लिए मांसाहारी जैसे मांस की दुकान पर पंक्तिबद्ध होकर खड़े रहते हैं वैसे ही चमड़ा खरीदने के लिए आपको भी उनके साथ पंक्ति में खड़ा रहना पड़े तो क्या आप चमड़े का उपयोग करना चाहेंगे? जैसे मांसाहारी अपने आहार के लिए रक्त-रंजित मांस ले जाते हैं, वैसे अपने पहनावे के लिए आपको रक्त-रंजित चमड़ा ले जाना कैसा लगेगा?

चूंकि चमड़े का सामान साफ-सुथरी दुकानों के आराम में खरीदा जाता है जहां चमड़े से जुड़े मांस, रक्त, आदि का हर निशान साफ कर दिया गया रहता है, वहां जूते खरीदने में ग्राहक को कोई दोष नहीं मालूम होता है। लेकिन क्या यह उसी तरह नहीं हुआ जैसे बातानुकुलित सुपर-मार्केट के आराम में प्लास्टिक के आकर्षक आवरण में लिपटा, खून के दाग मिटाए हुए मांस को दोष-

चर्म-रहित पर्याय

चर्म-रहित पर्यायों को टालने के लिए लोग ५ मुख्य बहाने बताते हैं

५ कृत्रिम पर्याय आसानी से उपलब्ध नहीं है।
हमारा उत्तर किसी भी जूते की दुकान में जाइये और चर्म-रहित जूते मांगिए वह आपको कई नमूने दिखा देंगे। वाटा की दूकान से भी कितनी अधिक सुलभता हम चाहते हैं?

४ चमडे की तुलना में पर्यायी पदार्थ के जूते ठीक तरह से 'सांस' नहीं ले सकते।
हमारा उत्तर चमडे के जूतों से गाय सांस नहीं ले सकती! पर्यायी पदार्थ गाय को तो सांस लेने देते हैं। और कॅन्वास और कॉड्यूरॉय कपडे के जूतों में हवा की खुली आव-जाव हो पाती है।

३ कॅन्वास और कॉड्यूरॉय कपडा चमड़े की तरह चमकदार नहीं दिखता।
हमारा उत्तर चमकदार दिखता है, पर एक पशु को मार कर, न? और अहिंसक पर्याय चुना तो गंदा दिखता है? यह सब देखने वाले की दृष्टी पर निर्भर है।

२ कृत्रिम पर्याय स्वच्छ पर्यावरण के अनुकूल नहीं हैं।
हमारा उत्तर जैसे की चर्मोद्योग अनुकूल है? स्वच्छ पर्यावरण को सबसे अधिक प्रदूषित करने वाला चर्मोद्योग ही है।

१ चर्मोद्योग के कर्मचारियों की जीविका का क्या होगा?
हमारा उत्तर वे लोग वही वस्तु दूसरे पदार्थों से बनाने में लग जा सकते हैं। वस्तु की मांग तो बनी रहेगी।

बहाने बनाना छोड़िये! अपनी अलमारी से चमड़ा निकाल दीजिए।

यह "अहिंसक चमड़ा"... क्या यह सचमुच अहिंसक है?

खादी ग्रामोद्योग ≠ अहिंसक

केवल इसलिए कि कोई चमड़ा खादी ग्रामोद्योग आयोग से आया है वह अहिंसक नहीं बन जाता। खादी ग्रामाद्योग आयोग ने केवल प्राकृतिक मृत्यु से ही मरे प्राणियों के चमड़े का उपयोग करने की नीति का बहुत पहले ही त्याग कर दिया। कत्लखाना और डेयरी वाले अब खुले रूप से उन्हें चमड़े की आपूर्ति करते हैं, यद्यपि पूछने पर खादी के विकेता इस बात को अस्वीकार करते हैं। क्योंकि लोगों को इसकी जानकारी हो जाने से यह संभव है कि धंदे में क्षति हो जाए।

"किड" यानि बच्चा...पर बकरी का

"किड" दस्तानों का मतलब बच्चों के दास्तानें नहीं। "किड" का अर्थ है बकरी के छोटे बच्चे की निकाली हुई खाल...उसे कत्ल कर के।

क्या फिर भी आप मुलायम और कोमल "किड" दस्ताने पहनना चाहेंगे?

असली चमड़े के उपयोग की आदत छोड़िये। ऐसी चीज़ पहनिये जिसके लिए किसी का कत्ल नहीं किया गया हो।